भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संगपत्रिका

वर्ष-6, वार्षिक अंक	सम्पादक : साधु मुकुंदजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदासजी	वार्षिक चन्दा-10.00
शनिवार, 25 दिसं. ' 82	मानद सहसम्पादक: डॉ. महेन्द्र दवे-श्री विमल दवे	प्रति अंक : 1.00

[काफी समय के बाद 'भगवत्कृपा' आपके पास पहुँच रही है। कुछ एक कारणवश इस 'भगवत्कृपा' पत्रिका के द्वारा हम आपकी सेवा ठीक ठीक समय से नहीं कर पा रहे थे। भगवत्वाणी, भगवच्चरित्र और गुणातीतसमाज के क्रियाकलाप की जानकारी आदि से आप वर्ञ्चित् रहे हैं। इसके लिये हमें अत्यंत खेद है और हम क्षमाप्रार्थी है। अब पत्रिका का पुनः प्रकाशन इस अंक से प्रारम्भ हो रहा है। हमें विश्वास है कि पत्रिका अब नियमित रूप से प्रकाशित होगी। आपका सद्भाव हमारे साथ है। पत्रिका आपकी ही है। अतः पत्रिका के माध्यम से 'भगवत्कृपा' हम सब पर अवतरित होगी ऐसी दृढ़ श्रद्धा है। जय स्वामिनारायण.... ।]

लोकवत्तु लीला कैवल्यम्

गुणातीत समाज के विश्वकर्मा और प्राणपुरुष भगवत्स्वरूप प.पू. काकाजी अक्तूबर में केदारनाथ की यात्रा पर गये और वहाँ से वापिस आकर 16 अक्दूबर के दिन सख्त सरदी और श्वासनली के सूजन एवं हृदय की बिमारी ग्रहण की....यह आप सभी को विदित है। ऐसे भगवन्मूर्ति संतो को लोकवत् बीमारी आती नहीं है, वे अपने आप बिमारी ग्रहण करते हैं। कई कारण होते हैं इसके...जैसे कि–

1. किसी भक्त या आश्रित पर भयंकर प्रारब्ध तुला हुआ हो, तो उस पर वह प्रारब्ध प्रहार न करे इस हेतु ऐसे भगवत्स्वरूप करुणामूर्ति संत स्वयं कुछ एक दिन के लिए बीमारी के रूप में अपने पर झेल लेते हैं और भक्त को बचा लेते हैं।

2. आध्यात्मिक मार्ग पर चलते हुए हम जैसे आश्रित साधकों भगवत्स्वरूप संत की इच्छा जानते हुए और यह समझते हुए भी कि हमारे उत्कर्ष के लिए ही वे हमें उच्चकोटि का अनुशासन देते हैं; अपनी जड़ता के कारण कहो या पंचविषय के रमणीय रागो पर हमारी आसक्ति के कारण कहो हम जब इनके निर्देश किए हुए राह पर नहीं चलते तब हमें चौंका कर एक सुझाव देने के लिये भी वे ऐसी बिमारी ग्रहण करते हैं।

3. प.पू. काकाजी का आदेश है कि पूर्वसंस्कारों से मुक्त होने का एक मात्र उपाय है–'नित्यनिरन्तर भगवद्भजन' ! स्वयं ब्रह्मस्वरूप होते हुए भी हमें शिक्षा देने के कारण मंदिरों में, सत्संगसभाओं में, शिविरों में, भक्तों के निवास स्थानों में, प्लेन में, रेलवे में, मोटरगाड़ी में नित्य निरंतर भगवन्नाम स्मरण की अविरत सतत् धून्य करते रहते हैं और हमें करवाते रहते हैं। किन्तु इसमें हमें अरुचि नहीं,

तो आलस के कारण शिथिलता तो आ जाती है। इस शिथिलता का निवारण करने के लिये भी ऐसी विभूति बिमारी ग्रहण करती है। स्वाभाविक है कि प.पू. काकाजी जैसे अपने प्रिय गुरुवर्य की बिमारी के ख्याल से ही कई गुने जोश से हम भगवन्नामस्मरण में मस्त हो जायें। अपने पर बीमारी झेल कर हमें भगवन्नाम स्मरण में प्रतिष्ठित करने की इनकी करुणा का ऋण हम कैसे चुका पायेंगे?

4. दरअसल 'भक्ति' क्या चीज है, यह हमें ख्याल ही नहीं। प.पू. काकाजी बार-बार हमारे घर आयें, हमारे घर हमारे मनमाने भोजन ग्रहण करें, हमारी सेवा ग्रहण करें और हमारी समस्याओं को सुने...इसी बात को हम समझते हैं–'हमने इनकी भक्ति करी'! दरअसल हमारी ऐसी भावनाओं के पास इन्हें झुका कर इनकी देह को कष्ट पहुँचाने के बजाय इनकी मरजी के मुताबिक हम चला करें, यही सच्ची भक्ति है। ऐसी भक्ि त में हमें जबरदस्ती प्रवेश करवाने संत बिमारी का चोला ओढ़ लेते हैं। सभी डॉक्टरों का यही निदान आया है कि सत्संगी सेवकों से पहुँचे मानसिक एवं शारीरिक बोझ के कारण प.पू. काकाजी के स्वास्थ्य को हानि पहुँची है। तो, अब सच्चे भाव से भक्ति अदा करने का मौका पू. काकाजी ने हमें दिया है...इनके स्वास्थ्य के लाभ हेतु पधरामणी, हमारे मनमाने भोजन वगैरह के आग्रह द्वारा हम इन्हें कष्ट न पहुँचायें... और इनकी मरजी के मुताबिक भजन, सेवा, सुहृदभाव रखते हुये इन्हें प्रसन्न करने तुल जायें...।

5. निजी सेवकों को, शिष्यों को, अन्तेवासियों को सतत् सहवास में रखकर निजी सेवा का अनोखा लाभ देकर अपने माध्यम से अक्षरधाम का दर्शन करवाने के उच्च पवित्र उद्देश्य से भी ऐसे संत बिमारी ग्रहण करते हैं।

प.पू. काकाजी ने इस समय इस प्रकार की बिमारी किस उद्देश्य से ली है, वह तो वे स्वयं ही जानें। हमें तो सतत् धून करनी है–भजन करना है; तो उनका उद्देश्य स्वयं सफल हो जायेगा। अकल कला खेलते हैं अक्षर !

बिमारी के प्रारंभ में पू. काकाजी तो बम्बई चले गये थे। किन्तु वहाँ आराम कहाँ? आराम, विश्राम की अत्यधिक आवश्यकता थी। अतः पू. कांतिकाका और सेवकों की प्रार्थना स्वीकार कर वे विद्यानगर पहुँचे। वहाँ प्रगट ब्रह्मस्वरूप प.पू. पप्पाजी की कड़ी निगाह में उन्होंने सम्पूर्ण आराम लिया। गुजरात की सुप्रसिद्ध कार्डियोलोजिस्ट डॉ. नीलमदेवी–जो हमारे महिला केन्द्र 'गुणातीतज्योत' की सक्रिय साधिका है, उनको सेवा का अपूर्व लाभ मिला....अन्तेवासी सेवक पू. अरुणभाई की भक्तिभाव भरी सेवा ग्रहण करी और प.पू. काकाजी ने काफी स्वास्थ्यलाभ पाया। आजकल प.पू. काकाजी बम्बई में बिराजमान है और स्वास्थ्य भी काफी रफ्तार से सुधर रहा है। प.पू. पप्पाजी, प.पू. स्वामिजी का सभी को आदेश है–''सभी भक्त प्रार्थनारत रहे....'' प्रतिदिन आधा घण्टा 'स्वामिनारायण' महामंत्र की धून्य करें.....'' प.पू काकाजी हमें प्रत्यक्ष स्वरूप में 6 फरवरी के दिन पुनः यहीं दर्शन देंगे।

☆ ☆ ☆

धर्मचक्रप्रवर्तन का बृहद् व्याप—

इतिहास की यह एक विशिष्ट घटना है कि महाराज की जन्मभूमि थी छपैया (यू.पी. में अयोध्या के पास) और उनकी कर्मभूमि बना गुजरात ! महाराज के दीक्षागुरु पू. रामानंदस्वामी की कर्मभूमि सौराष्ट्र के दो प्रदेशों तक ही सीमित था, किन्तु महाराज ने पूरे कच्छ, सौराष्ट्र और गुजरात में धर्मचक्रप्रवर्तन किया और इनके बाद भी कुछ एक साम्प्रदायिक संकुचिंतता के कारण वर्षों तक गुजरात में ही धर्म प्रवर्तन सीमित रहा।

किन्तु इस धर्म में विश्वव्यापी बनने की स्वयं भू शक्ति है। अतः ब्रह्मस्वरूप स्वामिश्री शास्त्रीजी महाराज जब 1948 में बम्बई में डाभोलकर रोड पर बिराजमान थे तब इन्होंने सत्संगीबंधु श्री गुलजारी

लाल नंदाजी को अपने और गुरुवर्य योगीजी महाराज के मध्य बिठा कर महाप्रभु सहजानंदस्वामी की मूर्ति भेंट रूप में दी और अन्तर से आशीर्वाद देते हुए कहा–

'आप दिल्ली जाओ....वहाँ स्वामिनारायण का संदेश फैलाना.....महाराज जैसे हमारी बात मानते हैं, इसी प्रकार इस संत के समागम के फलस्वरूप आपकी बात भी अवश्य सुनेंगे।'

इस प्रकार इनके द्वारा दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, आदि प्रदेशों में स्वामिनारायण भगवान का संदेश व्यापक रूप में प्रकाशित हो और स्वयं दृढ़ निष्ठा रखकर औरों में भी ऐसी निष्ठा जागृत कर ऐसी अभिलाषा से उनको दिल्ली भेजे थे। संयोगवशात् काफी समय बीत गया, किन्तु साक्षात् पुरुषों के संकल्प विफल जाने के लिये नहीं होते है। आज ब्रह्मस्वरूप स्वामिश्री शास्त्री जी महाराज का वह संकल्प प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी और प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी की प्रेरणा से सिद्ध हो गया है और उपरिनिर्देशित प्रदेशों में स्वामिनारायण का–अक्षरपुरुषोत्तम का सनातन गुणातीतज्ञान का प्रवर्तन करता हुआ सजीव, जाग्रत और सक्रिय केन्द्र साकार हो गया है।

परन्तु, आप सब यह भी जानते हैं कि हमारे भगवान, हमारे संत और हमारे पार्षद गण दिल्ली में अभी तक किराये के मकाने में निवास कर रहे हैं। अब यह प्रारंभिक अवस्था समाप्ति पर पहुँच रही है। 'दिल्ली विकास प्राधिकरण' (D.D.A.) ने हमें भगवान के मंदिर की निर्मिति के लिये जमीन प्रदान की है और वह भी अशोकविहार में ही ! आजकल आप अशोकविहार के जिस मंदिर में दर्शनार्थ आते हो, उसी स्थान के पास जमीन मिली है। अब प.पू. काकाजी. प.पू. पप्पाजी और प.पू. स्वामिजी की प्रेरणा से एक भव्य मन्दिर का निर्माण होगा और हमारी सारी आध्यात्मिक धाराएं ज्ञाति-जाति, स्वधर्म-परधर्म, देशी-विदेशी, स्वभाषी-परभाषी, धर्मी-विधर्मी, शासक-शासित आदि सब संकुचितता से परे रह कर वहाँ से प्रवहमान होगी।

इस जमीन की प्राप्ति के लिये भारत सरकार के वर्तमान निर्माण एवं आवास मंत्री माननीय श्री एच.के.एल. भगतसाहब एवं हमारे गुजराती समाज की श्रीमती विद्याबहन शाह ने जो परिश्रम किया है और दिल्ली के अनेक आदिक आत्मीय स्वजन सरीखें भक्तों ने जो योगदान दिया है, वह सराहनीय है। भगवान स्वामिनारायण और इनके प्रत्यक्ष स्वरूपों के शुभाशीर्वाद की कृपाबारीष सभी सहयोगियों पर हो.....

☆ ☆ ☆

...और श्रीजी महाराज ने कहा—

[पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान स्वामिनारायण जब इस भूतल पर विद्यमान थे तब प्रायः प्रतिदिन वे कहीं भी हो अपनी सत्संगसभाका आयोजन करते थे और उस समय के अपने भक्तों को 'वचनामृत' पिलाते थे। 'वचनामृत' अर्थात् अमृतमय वचन–अमृतमय वाणी ऐसी है जो सनातन काल तक रहने वाली है। हमारी व्यवहारमूलक वाणी की सार्थकता प्रयोजन सिद्ध होते ही नष्ट हो जाती है। किन्तु यह वाणी कभी नष्ट नहीं होती है,जो अमृतत्त्व की बात कहती है और अमृत के मुख से निकली है। श्रीजी महाराज–स्वामिनारायण भगवान नित्य अमृतमय है और उनकी हर चेष्टा, हर अव्यिंजना अमृतमयी ही है। उन्होंने अपने आश्रितों के कल्याण के लिए जिस वाणी द्वारा

परम सत्य का प्रतिदिन उद्‌घाटन किया वह है 'वचनामृत'। हमारा यह परम सौभाग्य है कि उन दिनों बोली गई वाणी उन्हीं के शब्दों में आज भी हमारे पास संग्रहित है और आज भी इसे लाखों लोग प्रतिदिन पढ़ते हैं और उससे प्रेरणा लेकर अपना जीवन धन्य बनाते हैं। सच में, यह 'वचनामृत' काल की कसौटी में पार उतर चुका है। परम तत्त्व क्या है? संसार का परम प्राप्तव्य क्या है? और यह कैसे प्राप्त हो सकता है? इन प्रश्नों के उत्तर अत्यंत सरल भाषा में श्रीजी महाराज ने दिये हैं और इतने वर्ष बीतने के बाद भी ये उत्तर आज भी इतने ही समाधानकारी हैं और रहने वाले हैं। इसमें वेद उपनिषद, सूत्र साहित्य, भाष्य साहित्य, पुराण, काव्य, इतिहास, धर्मशास्त्र आदि सबका निचोड़ है। भारत का सर्वमान्य, सर्वकालीन दर्शन महाराज की दृष्टि से पवित्र होकर, एक नया रूप लेकर यहाँ निखर उठा है। यह अमृत है जो जन्म-जन्मान्तर का पाथेय है। हमारी अध्यात्मभूख की परितृप्ति इससे होती है, होती रहेगी। संस्कृत में एक मार्मिक वाक्य है–**'क्षणे क्षणे यं नवतामुपैति तदेव रूपं रमणीयतायाः'** – प्रतिक्षण जो नया लगे वह असली सौन्दर्य है। 'वचनामृत' जब जब पढ़ों हर बार इसमें से नया ही अर्थ निकलता है, वह नया ही लगता है। यह वाणी उदित हुई है गुजराती भाषा के माध्यम से। 'वचनामृत' तो गुजराती साहित्य के प्रारंभिक गद्य के अध्येताओं के लिए आवश्यक अभ्यास ग्रंथ है। गुजराती साहित्य के प्रारंभिक गद्यकारों में 'स्वामी सहजानंद' का प्रमुख स्थान है। वास्तव में धर्मप्रचार करते हुए की गई यह आनुषंगिक सेवा है, किन्तु इसका मूल्य भी साहित्य के आलोचक की दृष्टि में महत्त्वपूर्ण है। महाराज का दृष्टिबिन्दु तो प्रजा की वाणी में प्रजा की चेतना को उजागर करने का ही था और वह इन्होंने अच्छी तरह से सम्पन्न किया है। हिन्दी भाषी मुमुक्षुओं भी इससे लाभान्वित हों–इस हेतु भगवान स्वामिनारायण की यह अमृतपूर्ण वाणी का कुछ कुछ अंश इस नये स्तम्भ से प्रति अंक प्रकाशित करेंगे....और यह सर्व का कल्याण करेगी इसमें किसी भी प्रकार की शंका नहीं है....!]

1. 'सब साधनों में कठिन साधन कौन सा है?'

–इस प्रश्न पर प्रकाश डालते हुए श्रीजी महाराज ने कहा–

भगवान के स्वरूप में मन की अखंडवृत्ति रखने से अधिक कठिन और कोई साधन नहीं है और जिस मनुष्य के मन की वृत्ति भगवान के स्वरूप में अखण्ड रहती है उससे अधिक कोई उपलब्धि शास्त्रों में विहीत नहीं है, क्योंकि भगवान की मूर्ति तो चिन्तामणि तुल्य है। जैसे यदि किसी पुरुष के हाथ में चिन्तामणि हो तो वह जो भी चाहे उस पदार्थ को प्राप्त कर लेता है, उसी तरह भगवान की मूर्ति में जिसके मन की अखण्डवृत्ति रहती है, वह यदि देखना चाहे तो जीव, ईश्वर, माया और ब्रह्म के स्वरूपों को तत्काल देख सकता है तथा वैकुण्ठ, गोलोक, ब्रह्ममहोल आदि भगवान के धामों को भी देख सकता है। इसलिये, भगवान के स्वरूप में अखण्डवृत्ति रखने से अधिक कठिन कोई साधन नहीं है और उससे बढ़कर कोई प्राप्ति भी नहीं है।

सेठ गोवर्धनभाई ने श्रीजी महाराज से प्रश्न पूछा कि 'जिसे भगवान की माया कहते हैं उसका स्वरूप क्या है?

तब श्रीजी महाराज बोले कि भगवान का भक्त जब भगवान की मूर्ति का ध्यान करता है, तब जो कुछ भी बीच में आकर आवरण यानि रुकावट करता है, उसे माया कहते है।

गढ़डा प्रथम प्रकरण-1 (क्रमशः)

स्वामी की बातें.....

[महाराज बार-बार कहा करते थे—यह गुणातीतानन्दस्वामी मूल अक्षरब्रह्म का अवतार है, हमारे रहने का चिरंजीव स्थान है; इनके प्रसंग में रहना-समागम में रहना। पू. गोपालानंदस्वामी जैसे योगेश्वर ने भी इस रूप में उनकी सराहना की थी। स्वामिनारायण भगवान के मान्य और संप्रदाय के सभी आचार्यो के आदर्शरूप पू. रघुवीरजी महाराज ने भी इन्हें संपूर्णतया पहचान कर, स्वयं तीर्थवासी के रूप में लगातार तीन महीने तक इनका समागम किया और 'सच्चे ज्ञानाचार्य तो ऐसे भगवत्स्वरूप संत ही है'—यह सत्य निर्देश किया। स्वामी ने भी महाराज की आज्ञा से अपने 82 वर्ष तक के जीवनकाल में अविरत अध्यात्मवार्ता करके अनेकों का महाराज में जुड़वाकर कल्याण किया, जड़ को चेतन बनाया, असुरों के हाथ में जपमाला दे दी, गरीबो के मित्र बने और संसार में माधुर्य फैलाया। इनके द्वारा करी हुई बातें ही मूल ज्ञान है, पूर्ण पुरुषोत्तम की वाणी का यह प्रथम महनीय भाष्य है। 'स्वामीनी वातु' के ग्रंथरूप में गुजराती में वह प्रकाशित है। हिन्दी पाठकों के लाभ हेतु इस अंक से यहां कुछ बातें क्रमशः प्रस्तुत करेंगे। हमें विश्वास है—इन चमत्कारी बातों के पठन, श्रवण, मनन और निदिध्यासन से अनेकों की चेतना जागृत हो जायेगी, अंधेरे में एक नया प्रकाश उपलब्ध होगा और महाकाल इनको स्पर्श नहीं करेगा।]

ये बातें कैसे पढ़नी है?—

'प्रथम तो सभी संकल्पों को छोड़कर एकाग्रचित्त होकर श्रीजी महाराज पुरुषोत्तम का स्मरण करके—यह बातें स्वयं स्वामिश्री हमें कर रहे हैं और हम सुन रहे हैं—यूं सुनना और अंतर में जाँचना और इन्होंने कहा हो ऐसा वर्ताव करना।'

1. भगवान और साधु की महिमा की बातें निरन्तर करनी और सुननी। महाराज तो स्वयं अपना अक्षरधाम, पार्षद एवं अपना समग्र ऐश्वर्य लेकर यहां (भूतल पर) आये हैं। वे अब भी वैसे ही है। देह को छोड़कर हमें जिनको प्राप्त करना है वे हमारे देह के होते हुए आज हमें प्राप्त हुए हैं; अब कुछ पाना शेष नहीं है। यह नहीं समझते, इसलिए हममें जीवभाव की निर्बलता रहती है। यदि ऐसा समझेंगे तो जीवभाव की निर्बलता मानी ही नहीं जायेगी और जीव का पूरा स्वरूप ही बदल जायेगा। अतः (भगवान और साधु की) महिमा समझने जैसा श्रेष्ठ कोई साधन नहीं है। इसके अतिरिक्त कितने ही साधन करो, पर जीव बल को नहीं पायेगा और ऐसी महिमा तो भगवदी के प्रसंग (समागम) द्वारा ही समझ में आती है। इसके सिवा महिमा नहीं समझी जा सकती है।

प्रकरण : 1-1

2. प्रह्लादजी ने नारायण के साथ कई दिन तक युद्ध किया, किन्तु वे भगवान को जीत नहीं सके; तब भगवान ने प्रह्लादजी से कहा—

'युद्ध से तो तुम मुझे जीत नहीं पाओगे। मुझे जीतने का उपाय तो यह है कि जीभ से मेरा भजन करना, मन से मेरा चिंतन करना, नेत्र में मेरी मूर्ति रखना। इस प्रकार निरन्तर मेरा स्मरण करना।

बाद में प्रह्लादजी ने इस प्रकार अभ्यास किया तब छह मास में भगवान उनके वश में हो गए। अतः भगवान को प्रसन्न करने का यही उपाय सर्वोत्तम है, सो वह सीखना।

प्रकरण : 1-3

3. (हममें) दोष रहते हैं और (प्रयत्न से भी) वे नष्ट नहीं होते हैं। तो क्या ये दोष केवल दोष ही

Regd. No. D (D) 655

हैं या इसमें कुछ गुण भी हैं?—यह प्रश्न है। इसका उत्तर यह है कि—

दोष के चुभने से हम सत्संग में दीन आधीन रहते हैं, सत्संग की हमें गरज रहती है और भगवान की स्तुति (प्रार्थना) होती रहती है। दूसरी ओर दोष का क्लेश रहने से ज्ञान (भगवान के स्वरूप का) होता है। यदि दोष न हो तो ऐसी गरज रहेगी नहीं। अतः इसमें भी गुण है।

प्रकरण : 1-12

4. करोड़ों काम बिगाड़ कर भी एक मोक्ष सुधार लेना। यदि करोड़ों काम सम्पन्न हो भी जायें किन्तु एक मोक्ष बिगड़ गया तो किया ही क्या?

प्रकरण : 1-14

5. भगवान ने कहा है कि मैं 'सत्संग' से जितना वश में आता हूँ इतना तप, यज्ञ, योग, व्रत, दान आदि साधनों से नहीं आता हूँ। वह 'सत्संग' क्या है? तो, महान एकान्तिक संत को हाथ जोड़ना और वे कहें वैसा करना यही 'सत्संग' है।

प्रकरण : 1-17

(क्रमशः)

☆ ☆ ☆

व्रतोत्सवसूची

1.	दि. 29.12.82	बुधवार	मू.अ.मू. गुणातीतानन्दस्वामीजी का भागवती दीक्षादिन
2.	दि. 9.1.83	रविवार	सफला एकादशी, ब्र.स्व. स्वामिश्री योगीजी महाराज का स्वधामगमन दिन
3.	दि. 14.1.83	शुक्रवार	मकरसंक्रान्ति
4.	दि. 19.1.83	बुधवार	वसंतपंचमी, शिक्षापत्री जयंती, ब्र.स्व. स्वामिश्री शास्त्रीजी महाराज का प्राकट्यदिन
5.	दि. 23.1.83	रविवार	नवमी, श्रीहरिजयंती
6.	दि. 25.1.83	मंगलवार	जया एकादशी, व्रत

Published by Sadhu Mukundjivandas for Yogi Divine Society,
A 103, Ashokvihar-III, Delhi-110 052. India, Tel. 718838
Printed at Thakkar printing press, 2588, Basti Punjabian, Subzi Mandi, Delhi-110 007 Phone : 524058